ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 137-139
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

जलवायु परिवर्तन एक विनाशकारी खतराः सुझाव

डॉ0 पारुल मिश्रा
प्रवक्ता, शिक्षा शास्त्र विभाग, एन0ए0के0पी0पी0जी0 कॉलेज फर्रुखाबाद (उ0प्र0) भारत

"आपने हमारे सपने, हमारा बचपन मैं अपने खोखले शब्दों से छीना हालांकि, मैं अभी भी भाग्यशाली हूं। लेकिन लोग झेल रहे हैं, मर रहे हैं, पूरा इको सिस्टम बर्बाद हो रहा है" हम सामूहिक विलुप्ति की कगार पर हैं और आप पैसों और आर्थिक विकास की काल्पनिक कथाओं के बारे में बातें कर रहे हैं। आपने साहस कैसे किया?..... दुनिया जाग चुकी है और आपको यहां इसी वक्त लाइन खींचनी होगी।" स्वीडन की 16 वर्षीय ग्रेटा थुनवर्ग ने जब संयुक्त राष्ट्र के समक्ष तीव्र स्वर में यह बात रखी तो विश्व को पता चला कि आज की भावी पीढ़ी सिर्फ स्वयं के शैक्षिक एवं आर्थिक विकास के बारे में ही चिंतित नहीं है वह विश्व के पर्यावरण एवं भावी पीढ़ी के लिए उसकी उपलब्धता के प्रति भी सजग एवं जागरूक है।

हम इस समय बहुत सारी वैश्विक की समस्याओं का सामना कर रहे हैं जिनमें कुछ पूर्णतः प्रा.तिक है तो कुछ काफी हद तक मानव निर्मित। अंधाधुंध विकास की दौड़ एवं जीवन को आरामदायक बनाने के नशे में हम कब विनाश का निमंत्रण पत्र तैयार कर लिए हमें एहसास ही नहीं हुआ। हम एक आपातकाल की स्थिति में पहुंच गए हैं और हमारा मौसम चक्र पूरी तरह चकरा गया है। मौसम की भौगोलिक सीमाएं भी परिवर्तित हो गई हैं। पहाड़ी क्षेत्रों पर भी तीव्र गर्मी हो रही है तो कहीं–कहीं मैदानी क्षेत्रों में भीशण भी ठंड, कभी बिन मौसम बरसात तो कहीं अपार सूखा दुनिया भर के कई देशों में इन हालातों पर स्वता ही आंदोलन जैसी स्थितियां आ गई हैं।

भारत में सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका द्वारा गैसों का उत्सर्जन शून्य स्तर पर लाने की मांग की गई, जो कि प्रथम .ष्टया असंभव कार्य लगता है परंतु यदि हम भारतीय संस्.तिक व अपनी परंपराओं पर विचार करें तो हम देखते हैं कि भारत प्रारंभ से ही अत्यंत विकसित एवं दूरदर्शी सोच वाला राष्ट्र रहा है हमारा हर त्यौहार एवं मानव जीवन के संस्कार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्र.ति से संबंधित रहे है हम प्र.ति को पूजते हैं। क्योंकि हम शुरू से ही उसकी महत्वता को जान चुके थे पर पश्चिमीकरण के अनुसरण आधुनिकीकरण की तीव्र इच्छा में हम स्वयं का अहित कर बैठे।

असंभव कुछ भी नहीं भूटान का उदाहरण हमारे समक्ष है, जिसने कार्बन उत्सर्जन से ज्यादा ऑक्सीजन उत्पन्न करने की योजना बनाई और कार्बन नेगेटिव हो गया। कैसे कर पाया यह चमत्कार भूटान, क्या नीति अपनाई गई भूटान में–

हरित क्षेत्र के लक्ष्य हेतु भूटान ने 70 प्रतिषत क्षेत्र को पेड़ों से आच्छादित रखा है जिससे कार्बन डाइऑक्साइड को सोख लिया जाता है।

देश में इमारती लकड़ी के निर्यात पर रोक है।

ऑर्गेनिक खेती ही की जाती है।

भूटान में कुछ दीर्घगामी लक्ष्य भी रखें है जैसे– 2030 तक कचरा मुक्त देश का लक्ष्य।

भारत जैसा कि पहले भी कहा गया प्र.ति के महत्व को स्वीकारता आया है, पर फिर भी हम जान के अंजान बनते गए और आज स्थिति विचारणीय हो गई। वेदार्णा फाउंडेशन की निदेशक प्रियंका मलिक का भी मानना है कि पर्यावरण विश्वव्यापी समस्याओं में से एक है, परंतु भारत में यह एक डरावना रूप लेने लगा है। ग्रीन पीस रिपोर्ट के अनुसार विश्व के 10 शहरों में से 7 शहर भारत के हैं इतना ही नहीं भारत का एक भी शहर विश्व स्वास्थ्य संगठन के मापदंडों पर खरा नहीं उतरता है। शुद्ध वायु के मामले में मार्च 2020 में प्रकाशित वाटर रिसोर्सेज तथा चौलेंजिस अध्ययन के अनुसार भारत में लगभग 80 प्रतिशत पानी कूड़े कचरे या सिवेज के कारण प्रदूषित हो चुका है, तथा भूमिगत जल भी विभिन्न ऑर्गेनिक एवं इन ऑर्गेनिक रसायनों के कारण बुरी तरह प्रदूषित हो चुका है।

भारत में बहुत सी वर्ड सेंच्यूरी है जहां सुदूर देशों से प्रतिवर्ष पक्षी आते हैं एक विशेष मौसम में। परंतु जलवायु परिवर्तन की स्थिति इस भ्रमण को प्रभावित कर रही है 2002/2003 की शरद ऋतु में कान्हा नेशनल पार्क में सूखे के कारण यहां साइबेरियन पक्षी भारत में नहीं आए तथा इस प्रकार 2001 में साइबेरियन पक्षियों का आखिरी जोड़ा भारत में देखा गया। मौसमी आपातकालीन स्थितियां हमारी .षि व्यवस्था को भी प्रभावित कर रही हैं, अत्यधिक वर्षा, ओलावृष्टि, तूफान या सूखे के कारण .षि उत्पादन बुरी तरह प्रभावित हुआ, परिणाम स्वरूप बड़ी मात्रा में भारत में किसानों ने आत्महत्या की। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार 2018 में जहां 5763 किसानों ने तथा सन् 2019 में 5957 किसानों ने आत्महत्या कर ली। आंकड़े और भी भयावह है जिसमें स्पष्ट हो रहा है कि पर्यावरण की स्थिति किसी आपातकाल से कम नहीं।

अनुरूपी लेखक

ऐसा नहीं है कि सरकारी स्तर पर प्रयास नहीं हो रहे हैं बहुत से कानून बनाए गए हैं और बहुत से जागरूकता एवं सामुदायिक कार्यक्रम भी चलाये जा रहे है। जन जागरूकता का अपना ही विशेष योगदान है। पर्यावरणविद अलंमित्रा पटेल जी का कथन है कि कचरे के ढेर से ग्रीन हाउस गैस मीथेन बनती है जो कार्बन डाइऑक्साइड से 24 गुना अधिक नुकसानदायक है तथा कचरे से निकलने वाला तरल वहॉ के भूजल को 30 साल तक दूषित करता है। ऐसे में यदि प्रत्येक भारतीय घर अपने घर के कचरे को कम करके तथा उसका उचित प्रबंध प्रबंधन करके योगदान करें तो हम दो बहुत बड़ी समस्याओं को काफी हद तक समाप्त कर सकते हैं।

इस भागती दौड़ती जिंदगी में जब हम स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति इतने उदासीन हो गए हैं, तो पर्यावरण के प्रति दायित्व की अनुभूति का काल्पनिक सी प्रतीत होती है। हमें बस भागते रहना है काम से घर, घर से बाजार और किसी और काम के लिए और समयाभाव तथा आरामदायक जीवन शैली के कारण थोड़ी सी दूरी भी वाहनों से ही तय की जाती है। साथ ही क्रयशक्ति में वृद्धि के कारण अधिक लोग वाहन खरीद रहे हैं। इन वाहनों से जहरीली दमघोंटू गैसें जैसे– नाइट्रोजन ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर ऑक्साइड निकलती है जो पर्यावरण को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। इसके लिए भी लोगों को जागरूक करना होगा, क्योंकि कार्बन उत्सर्जन ओजोन परत को पर प्रभावित तो कर ही रहा है यह ग्रीन हाउस प्रभाव का भी कारण है रमनकांत त्यागी जो कि नेचुरल एनवायरमेंट एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के निदेशक है ने यह भी कहा कि वाहनों का उत्पादन व बिक्री, एयर कंडीशन का तापमान निश्चित करके पानी उपयोग की मात्रा को तय करके .षि क्षेत्र में परिवर्तन, पीपल व चौड़े पत्तों की प्रजाति के जंगल खड़े करके हम कार्बन उत्सर्जन को कम कर सकते हैं। पेरिस समझौते के अनुसार भी भारत को वर्ष 2030 तक कार्बन उत्सर्जन की तीव्रता के प्रतिशत को भी कम करना है। जिसके लिए अक्षय ऊर्जा और पांच तत्वों (पृथ्वी, अग्नि, जल, आकाश व वायु) के उचित उपयोग के लिए भारत में प्रतिबद्धता दर्शायी है।

हमें कार्बन पदछाप के लिए घरेलू स्तर से प्रयास करने होंगे, जागरूकता वीडियो को वायरल करना होगा कि किस–किस प्रयास से हम अपने घरों को पर्यावरण अनुरूप बना सकते हैं। जैसे– घर की छतों को सफेद रंग से रंगे ताकि सूर्य की पराबैंगनी किरणें उससे टकराकर चली जाएं, सौर ऊर्जा पर आधारित उपकरणों का प्रयोग करें, वर्षा जल को भूमिगत जल बनाने की विधियां अपनाएं, घरों में प्रकाश और वायु की उचित व्यवस्था द्वारा बिजली पानी की खपत को कम करें। घरों में वातानुकूलन उपकरणों का इस्तेमाल कम करें क्योंकि इससे निकलने वाली गैस है ग्लोबल वार्मिंग कर रही हैं यह ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन कितनी भयावह समस्या है इसी से पता चलता है कि भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई के 2050 तक समुद्र का जल स्तर बढ़ने से डूबने की संभावना लगाई जा रही है।

हमें समझना होगा कि विकास का महत्व ऊंचे–ऊंचे भवन बनवा लेना, उद्योग धंधों को चरम पर ले जाना, बड़ी–बड़ी गाड़ियों में घूमना, मिसाइलों और शास्त्रों का प्रदर्शन नहीं है। विकास का तात्पर्य है कि अपने आने वाली आपातकालीन परिस्थितियों का पूर्वानुमान लगाकर अपने क्रियाकलापों, अनुसंधानों को इस प्रकार करें कि हमारा मात्र वर्तमान ही सुखमय न हो अपितू भविष्य भी सुखमय हो। हमें पर्यावरण की समस्याओं को निम्नलिखित पदों पर योजनावद कर समाधान कर सकते हैं–

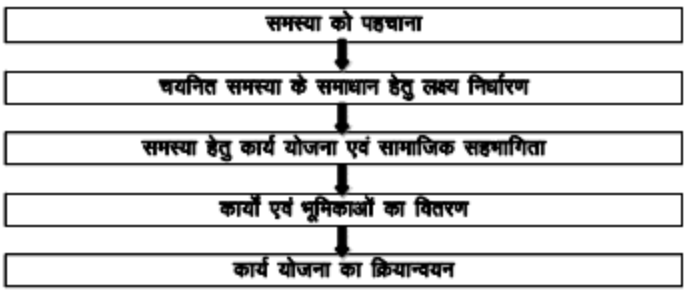

उपर्युक्त पद किसी भी देशव्यापी, राज्य स्तरीय तथा नगर स्तरीय पर्यावरण समस्या पर लागू किए जा सकते हैं। ऐसा नहीं है कि प्रयास सफल नहीं होते हमारे सामने स्वच्छता अभियान की सफलता इसका बड़ा उदाहरण है। 2 अक्टूबर 2014 को भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किए गए राष्ट्रीय न्यायी स्वच्छ भारत अभियान का असर हमें हमारे नगर गलियों में तो दिखाई ही देता है। साथ ही व्यवहारिक परिवर्तन भी अनुभव करते हैं। जहां हम कोई भी कचरा कहीं भी फेंकने की प्रवृत्ति रखते थे वहीं अब हम ने उसे रास्ते पर फेंकने के स्थान पर उचित स्थान पर ही फेंकते हैं। जलवायु परिवर्तन की आपातकालीन स्थिति के लिए हम इंसान ही गुनहगार हैं तो हल भी हम लोगों को ही निकालना होगा सभी समाजों को कोशिश कर सरकार का साथ देना होगा। वाहय आडम्बर भरी जीवनशैली में बदलाव लाने की आवश्यकता है यदि हम अपने बच्चों को स्वस्थ

पर्यावरण देना चाहते हैं तो, सिर्फ बैंक बैलेंस की वसीयत से काम नहीं चलने वाला यदि प्राणवायु की धरोहर देने में हम असमर्थ रहे तो। सिर्फ भारत ही नहीं दुनियाभर की सरकारों को शून्य कार्बन उत्सर्जन के लिए सिर्फ कागजी नहीं व्यवहारिक रूप से प्रतिबद्धता दिखानी होगी। आवश्यकता पड़े तो सख्त से सख्त कानून भी बनाने होंगे। भारत के मामले में धनात्मक पहलू यह है कि यहां हम गंभीरता से काम कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. थुनबर्ग ग्रेटा, ''संयुक्त राष्ट्र में पूर्ण भाषण'', 23 सितंबर, 2019, से उपलब्धः https://www.nbcnews.com/news/world/read-greta-thunberg-s-full-speech-united-nationsclimate-action-n1057861
2. कृष्णा ललिता, मीत अलीमित्र पटेला ''गार्बोलॉजिस्ट, जिसने भारत को ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम दिए'', 6 दिसंबर, 2019, , https://earthymatters.blog/2019/12/06/meet-almitra-patel-the-garbologist-who-gaveindia-solid-waste-management-rules/
3. त्यागी रमन कांत, "नकारने से नासूर बन जाएगी मौसम परिवर्तन की समस्या'', 04 जून, 2020,, https://www.outlookhindi.com/view/general/write-up-by-nadiputra-raman-kant-tyagi-onweather-change-problem-in-outlook-hindi-49320
4. गोस्वामी उर्मी, 2019 https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/india-says-it-will-domore-to-slow-down-climate-change/articleshow/70813231.cms?from=mdr
5. पटनायक अमर, , "Many problems with draft green impact assessment", 20 मई 202C https://www.newindianexpress.com/opinions/2020/may/20/many-problems-with-draft-green impact-assessment-2145552.html. 7- hindustentimes.com
6. www.Hindustantimes.com
7. जोशी अनिल प्रकाश, "केवल कानून ही पर्याप्त नहीं'', 01 दिसंबर, 2019, अमर उजाला, मुरादाबाद में प्रकाशित लेख ।
8. गुप्ता संजय, ''प्रदूषण नियंत्रण पर निराशाजनक रवैया'', नवंबर 17, 2019, दैनिक जागरण, मुरादाबाद में प्रकाशित लेख।
9. मलिक प्रियंका, "राष्ट्रव्यापी समस्या बनता प्रदूषण'', अक्टूबर 26, 2019, दैनिक जागरण, मुरादाबाद में प्रकाशित लेखाद्य
10. गायव हो रहे साइबेरियन सारस का मामला https://www.downtoearth.org.in

*****